RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

कामायनी महाकाव्य में नारी

डा0 सुभाष कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय जखोली, रूद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड)

शोध संक्षेप

कामायनी हिन्दी भाषा एक महाकाव्य है। इसके रचयिता छायावादी युग के प्रमुख साहित्यकार जयशंकर प्रसाद जी हैं। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि महाकाव्य है। प्रसाद जी की यह अतिंम काव्य रचना 1936 ई0 में प्रकाशित हुई, परन्तु इसका प्रणयन प्रायः 7–8 वर्ष पूर्व ही हो गया था । इस महाकाव्य की आधारभूमि प्रसाद जी ने काशमीरी शैव प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है। इस महाकाव्य में प्रसाद जी ने चिंता से प्रारम्भ कर आन्नद तक पन्द्रह सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतवृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया है कि मानव सृष्टि के आदि से अन्त तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है। कामायनी में प्रसाद जी ने नारी के स्वरूप को उदात्त रूप में चित्रित किया है। प्रसाद जी की दृष्टि में नारी श्रृद्धा, दया, माया, ममता, और त्याग की प्रतिमूर्ती है, इसिलिए उन्होंने कामायनी में नारी के आर्दश रूप को चित्रित किया है। आपके इसी दृष्टिकोंण ने ही कामायनी को दार्शनिक सांस्कृतिक व साहित्यिक रूप में उत्कृष्ट रचना बनाया हैं। सम्पूर्ण कामायनी महाकाव्य में प्रसाद जी ने नारी के स्वरूप को सौन्दर्य, प्रेम, आशा, समर्पण भाव, लज्जा, करूणा और महामानवी के रूप में प्रस्तुत किया है। कामायनी में ही प्रसाद जी ने श्रृद्धा के माध्यम से ही नारी के लोककल्याणकारी रूप को प्रस्तुत किया है। वास्तव में जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी में एक आदर्श स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया हैं। आपने कामायनी में ही इड़ा के माध्यम से बौद्धिक आधार पर बौद्धिक स्त्री की कल्पना भी की है। जो बुद्वि का प्रतीक है। स्त्री और पुरूष सृष्टि के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस रूप से भी प्रसाद जी ने कामायनी में नारी के महत्व को रेखाकिंत किया है। आपने नारी को हृदय व बुद्वि का प्रतीक माना है।

प्रस्तावना

संसार के प्रारम्भ से लेकर अब तक नारी पुरूष के जीवन को साकार करती आयी है। नारी ने पग–पग पर पुरूष के जीवन को सार्थकता प्रदान की है, नारी ने अपनी ममता, वात्सल्य, त्याग, करूणा, दया, माया, प्रेम, कोमलता एवं मधुरता से पुरूष की कठोरता को घटाकर उसके सूखे जीवन में प्रेम की,ममता की अजस्त्र धारा प्रवाहित करने का काम किया है।

नर–नारी का साथ आदि–अनादिकाल से चला आ रहा है। शास्त्रों में भी स्त्री को पुरूष की अर्धांगनी माना जाता रहा है। नारी और पुरूष एक ही सिक्के के दो पहलू है, इसलिए नर है तो नारी है, साहित्य में नर के साथ–साथ नारी को भी स्थान प्रदान किया गया है। नारी–नर की शक्ति है, नारी के साथ के कारण ही नर शक्तिवान कहलाता है। नारी को हिन्दी साहित्य में अनेक रूपों में चित्रित किया गया है, परन्तु अगर हम जयशंकर प्रसाद जी की बात करते हैं तो उनके काव्य में नारी प्रेमिका के रूप में मुख्य रूप से उभरकर हमारे सामने आयी है उन्होंने नारी को प्रेमिका के रूप में अपने साहित्य में अमर बना दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी का उददेश्य जयशंकर प्रसाद जी के काव्य में नारी के प्रभावशाली स्वरूप की समीक्षा करना एवं उसके प्रभाव को देखना है। प्रस्तुत शोधपत्र को शोधार्थी ने पुस्तकों के अध्ययन, साहित्यकारों के विचारों के मनन, पत्र – पत्रिकाओं के माध्यम एवं मौलिक प्रतिभा के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास किया है।

''कामायनी महाकाव्य में नारी''

समाज में नारी को जो उचित स्थान मिलना चाहिए था वह नहीं मिला परन्तु आधुनिक काल में छायावादी युग के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी ने अपने काव्य में नारी को विभिन्न स्वरूपों में चित्रित किया है। छायावाद 1918 से 1936 ई0 तक माना जाता है छायावाद के मुख्य रूप से चार स्तम्भ माने जाते हैं जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नन्दन पंत और महादेवी वर्मा इन सबने अपने काव्य में नारी को प्रमुखता

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

के साथ चित्रित, वर्णित करने का काम किया एवं नारी के प्रेम और सौन्दर्य का सूक्ष्म वर्णन किया। जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में श्रृद्धा के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार से किया है–

"नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।।"1

प्रसाद जी ने श्रद्धा को नारी के रूप में सौन्दर्य की पराकाष्ठा तक पहुँचाने का काम किया है जयशंकर प्रसाद ने कामायनी महाकाव्य में ही श्रृद्धा को महिमामण्डित करके चित्रित किया है। नारी को प्रसाद जी ने पुरूष के जीवन में अमृत धारा के समान मानकर उसको पुरूष के जीवन में प्रेम की धारा के समान मानकर उसका वर्णन किया है–

"नारी तुम केवल श्रृद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।" 8

प्रसाद जी ने कामायनी में श्रद्धा को सभ्य और सुसंस्कृत स्त्री के रूप में प्रस्तुत करने का काम किया है। श्रृद्धा मनु को जीवन के सत्य से भी रूबरू कराती है जीवन को भोग न मानकर आशा का प्रेरणादायी मानकर कहती है कि–

"तप नहीं केवल जीवन सत्य, करूण यह क्षणिक दीन अवसाद।
तरल आकांक्षा से हैं भरा, सो रहा आशा का आल्हाद।।"3

इसी प्रकार श्रृद्धा मनु को जीवन की पुरातनता को छोड़कर नवीनता ग्रहण करने की प्रेरणा प्रदान करती हुई कहती है कि–

"पुरातनता का यह निर्भीक,
सहन करती न प्रकृति एक पल।
नित्य नूतनता का आनन्द,
किए है परिवर्तन में टेक।।"4

कामायनी में श्रृद्धा को प्रसाद जी ने त्यागी नारी के रूप में समर्पित करने का भी काम किया है। उन्होंने श्रृद्धा को मनु के जीवन रूपी मार्ग में आत्मसमर्पण करते हुए भी प्रस्तुत किया है–

"समर्पण लो सेवा का सार,
सजल संस्कृति का यह पतवार।
आज से यह जीवन उत्सर्ग,
इसी पदतल में विगत विकार।।"5

प्रसाद जी ने कामायनी में ही श्रृद्धा के रूप श्रृंगार का वर्णन भी एक कुशल सौन्दर्य के चितेरे के रूप में किया है उसकी श्रृद्धा के रूप और सौन्दर्य की प्रशंसा उन्मुक्त कंठ से की है–

"आह ! वह मुख पश्चिम के व्योंम
बीच जब घिरते हो घनश्याम।
अरू रवि मंडल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम।
या कि नव–इन्द्रनील लघु श्रंग
फोड़कर धधक रही को कान्ति।।"6

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

श्रृद्धा को प्रसाद जी ने कामायनी में मानवता का संदेश देने वाली आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है। भयानक जल विनाश के कारण शोकग्रस्त मनु को श्रृद्धा निराशा के अवसाद से निकालकर मानवता का आशा रूपी सन्देश देती है। इतना ही नहीं अपितु मनु के चरणों में अपना सम्पूर्ण जीवन भी प्रसन्नता के साथ समर्पित कर देती है–

''दया, माया, ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास।
हमारा हृदय रत्न–निधि स्वच्छ
तुम्हारे लिए खुला है पास।।
और क्या यह तुम सुनते नहीं
विधाता का मंगल वरदान।।
शक्तिशाली हो विजयी बनों
विश्व में गूँज रहा जयगान।।'' 7

एक सच्ची, सरल एवं सहृदय प्रेमिका के रूप में भी प्रसाद जी ने कामायनी में श्रृद्धा को चित्रित किया है। प्रसाद जी ने श्रृद्धा में प्रेमिका के रूप में लज्जा, प्रेम, करूणा, प्रेम सभी सदगुणों का समावेश किया है–

''औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओं।
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओं।।''8

स्त्री को एक चित्र की भाँति समझने वाले प्रसाद जी ने उसमें अनेक प्रकार के रंगों को भरने का कार्य किया है। उन्होंने नारी को इन शब्दों में व्याख्यायित करने का काम किया है–

''नारी जीवन का चित्र यही क्या?
विकल रंग भर देती हो।
अस्फुट रेखा की सीमा में
आकार कला को देती हो।''9

इसी प्रकार से प्रसाद जी ने कामायनी में श्रृद्धा को सुमन बिखेरने वाली और महामानवी के रूप में वर्णित किया है कि–

''श्रृद्धा ने सुमन बिखेरा
शत–शत मधुपों का गुंजन,
भर उठा मनोहर नभ में,
मनु तन्मय बैठे उन्मन।।''10

प्रसाद जी ने श्रृद्धा के लोक कल्याणकारी स्वरूप को प्रमुखता के साथ उभारने का काम किया है। इसी कारण मनु भी श्रृद्धा से प्रभावित होकर कहते है कि–

''हम अन्यन और कुटुम्बी
हम केवल एक हमीं है।
तुम सब मेरे अवयव हो
जिनमें कुछ नहीं कमी है।।''11

वास्तव में नारी का माता रूप अति उत्कृष्ट रूप होता हैं। प्रसाद जी ने नारी में माता की छवि को भी कामायनी में प्रस्सुत किया है। प्रसाद जी का मानना है, कि माता का रूप स्त्री के सभी रूपों से उत्कृष्ट होता है। प्रसाद जी ने नारी को मातृशक्ति के रूप में चित्रित करते हुए कहा है, कि–

''झुले पर उसे झुलाऊँगी दुलरा कर लूगी बदन चूम मेरी छाती से लिपटा इस घाटी में लेगा सहज घूम। मेरी आँखो का सब पानी, बन जायेगा अमृत स्निग्ध उन निर्विकार नयनों में जब देखूँगी अपना चित्र मुगध।''[12]

और प्रसाद जी ने सत्य ही कहा है कि माता इस पृथ्वी पर स्त्री का सुन्दरतम रूप है। जो सभी धर्मग्रन्थों व शास्त्रों में भी वर्णित है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी के लज्जा सर्ग में नारी के मन के आन्तरिक भाव लज्जा का चित्रण बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। लज्जा नारी के मन का आन्तरिक भाव है। लज्जा ही नारी को संयम, त्याग, बलिदान और समर्पण की शिक्षा देती है। नारी अपना भविष्य समझने में असमर्थ है। अतः लज्जा उसे सद्मार्ग पर ने जाने वाली है। परन्तु जयशंकर प्रसाद जी के अनुसार लज्जा का जन्म वही पर होता है। जहाँ पर सौन्दर्य होता है उन्होंने सौन्दर्य और लज्जा को किस प्रकार से रेखाकिंत किया है। दृश्टव्य है–

''उज्जवल वरदान चेतना का सौन्दर्य जिसे सब कहते है। जिसमें अनंत अभिलाषा के सपने सब जगते रहते है। मैं उसी चपल की धात्री हूँ गौरव महिमा हूँ सिखलाती ठोकर जो लगने वाली है उसको धीरे से समझाती।''[13]

छायावादी कवियों ने सौन्दर्य भावना को अपने साहित्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। इसी भावना को जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी में भी वर्णित किया हैं। आपने सूक्ष्म सौन्दर्य सत्ता की प्रतिष्ठा की है। प्रसाद जी के काव्य में आत्मिक बोध को अधिक महत्व मिला है। जिसमें अमूर्त अशरीरी सौन्दर्यप्रियता की प्रधानता है कामायनी की श्रृद्धा का सौन्दर्य इसका पुष्ट प्रमाण है–

''और देखा वह सुन्दर दृश्य
नयन का इन्द्रजाल अभिराम।
कुसुम वैभव में लता समान,
चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम।''[14]

उपरोक्त अध्ययन, मनन, विश्लेषण के पश्चात कहा जा सकता है कि प्रसाद जी ने कामायनी में श्रृद्धा के रूप में एक आदर्श भारतीय नारी की प्रतिमूर्ति मानकर भारतीय नारी को साहित्य में प्रतिष्ठित करने का महान एवं सफल कार्य किया है एवं भारतीय साहित्य में नारी को उद्वात्त एवं महान रूप में कामायनी में श्रृद्धा को चित्रित किया है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि कामायनी में प्रसाद जी ने नारी का उत्कृष्ट वर्णन एवं चित्रण किया है। वास्तव में श्रृद्धा ने जैसे अवसाद ग्रस्त व चिन्तित मनु में उत्साह, दया, माया, ममता से नवजीवन और नवीन आशा का मधुरिका व अगाध विश्वास सचार करती है उसी से ही श्रृद्धा का वास्तविक चरित्र पाठ्क कें समक्ष उपस्थित हो जाता है। इस प्रकार हम निश्चित रूप से कह सकते है कि प्रसाद जी ने कामायनी में नारी के उत्कृष्टतम और उदास रूप को चित्रित व वर्णित किया है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. कामायनी, प्रसाद जयशंकर डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली–2006, पृष्ठ–43
2. वहीं पृष्ठ–44
3. कामायनी, प्रसाद जयशंकर, चतुर्थ संस्करण, 1978, प्रसाद प्रकाशन, गोर्वधन सराय, वाराणसी, पृष्ठ–44
4. वहीं पृष्ठ–72
5. कामायनी का रचना संसार–भारती भण्ड़ार लीडर प्रेस इलाहाबाद–1977, पृष्ठ–73
6. वहीं पृष्ठ–48
7. कामायनी, प्रसाद जयशंकर, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रकाशन नई दिल्ली, 2006,पृष्ठ–51
8. वही पृष्ठ–96
9. वही पृष्ठ–27
10. वही पृष्ठ–84
11. वही पृष्ठ–41
12. जयशंकर प्रसाद ग्रंथावली, ईर्ष्या सर्ग, भाग–4, मिश्र डा0 सत्य प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद–2015, पृष्ठ–562,
13. अर्वाचीन हिन्दी काव्य, जुगरान डा0 आशा, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, 2008,पृष्ठ–32
14. वही पृष्ठ–16